



श्री. शांतिलालजी मुथ्था
संस्थापक, BJS

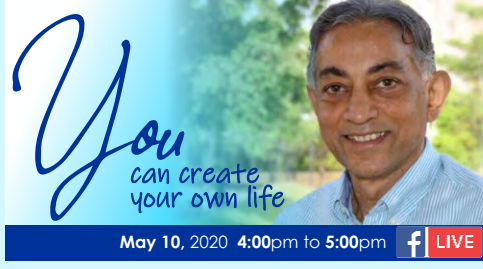
2020
Bulletin
Hindi bi-weekly issue

Edition 32
24th May 2020



YOU CAN CREATE YOUR OWN LIFE

(मातृ दिवस 10 मई, 2020 को जूम व
फेसबुक पर आपके संबोधन के आधार पर)



Shri Vallabh Bhanshali is home grown Investment Banker. He is CA, Lawyer & Educationist. Founder of Enam Finance, Flame University, Satya Vigyan & Desh Apnaye Foundation. Director-Shantilal Mutha Foundation, Trustee-BJS, National President-FJEI. A multi faceted personality full of spirituality.

जिन्होंने हमें जीवन दिया, पोषण कर बड़ा किया, संस्कार दिए उन सभी माताओं के प्रति मातृदिवस के उपलक्ष्य में कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ. मातृशक्ति कभी विस्मृत न हो और एक ऋणी के रूप में उन्हें व उनके उपकारों का हम प्रतिपल स्मरण करते रहें.

हमारे जीवन का निर्माण हम स्वयं कैसे करें? जीवन निर्माण का अभिप्राय उस परिवर्तन से है जो हमें सफलता के द्वार तक ले जाये. प्रकृति हमें बहुत कुछ मुफ्त में देती है जैसे पानी, हवा, श्वास, माता-पिता, गुरु, परिवारजन्, मित्रजन् आदि. इस मुफ्त की हमें आदत हो गई है. मुफ्त का आकर्षण भी सहूलियत भरा है. जितना मन को भाया उतना लिया और शेष छोड़ दिया. मुफ्त को पाने की आदत विकृति है. हम इसके व्यसनी हो गए हैं. देश में जितने धर्मान्तरण तलवार की धार के आधार पर हुए, उससे अधिक मुफ्त के चक्कर में हुए हैं. ऐसा नहीं है कि यह धर्मान्तरण किसी विशेष समय या दर्जे का हुआ हो. एक अविरत प्रक्रिया के रूप में, हमारा भी हो रहा है, जिसका एहसास हम कर नहीं पाते. फेसबुक, इंटरनेट आदि अनेक सुविधाएं आज मुफ्त में मिल रही हैं, किन्तु क्या हमने जानने का प्रयत्न किया कि हम उन्हें क्या दे रहे हैं? गूगल और फेसबुक पर यदि आधा घंटा भी चेटिंग कर लें तो वे हमारे बारे में इतना जानने लगते हैं, जितना हम स्वयं को आज तक नहीं जान पाए. मुफ्त का मिलना सहज होता है इसीलिए स्वभाव में आकर हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन जाता है. भले ही प्रकृति हमें बहुत कुछ मुफ्त में देती है, किन्तु इतनी आसानी से नहीं देती. हमें चलना सीखाने से पहले हजार बार गिराती है. आज दुनियाँ में जो कुछ मुफ्त मिल रहा है, वह निश्चित ही एक षड़यंत्र है.

Create your own life में 'your' को समझने के लिए सर्व प्रथम 'you' को समझना आवश्यक है. 'You' यानि हम स्वयं, किन्तु रुकावट हमारे स्वभाव में है. हमारी प्रकृति की चारित्रिक विशेषता यह है कि वह हमारे भीतर से प्रकट होती है, इसीलिए उसे स्व-भाव कहते

हैं. मुफ्त और आसान पाना ही हमारा जन्मसिद्ध स्वभाव बन चुका है. काम नहीं करना या कम करना, आलस्य करना किन्तु पैसे के पीछे भागना यह हमारा स्वभाव होता जा रहा है. यह इसलिए हो रहा है कि पैसा कमाना तो मजबूरी है, किन्तु लक्ष्य तो मौज मजा करना है. आलस्य हमारा संस्कार बन चुका है. हम कहते भी हैं कि इतना छोड़कर जाएंगे कि सात पीढियां बैठकर खाएं. क्या हमारी मानसिकता उन्हें स्थाई रूप से आलसी बनाना तो नहीं? समाज की व्यवस्थाएं भी अब ऐसी ही बनने लगी हैं कि पांच दिन काम करो और दो दिनों में उपार्जित को खर्च कर दो या मौज करो. भगवान महावीर ने उत्तराध्ययन के एक सूत्र में बार बार गौतम को संदेश दिया कि सूक्ष्म से सूक्ष्म क्षण के लिए भी आलस्य नहीं करना. भगवान बुद्ध ने चार शब्दों में कहा "वयधम्मा संखारा, अपम्मादेन संपादेथ". बिना प्रमाद के हर संस्कार के उत्पाद व्यय स्वभाव को जानते रहो.

अंधानुकरण हमारे जीवन निर्माण में अवरोध समान है. हम बाल्यकाल से बहुत कुछ अनुसरण से सीखते हैं, किन्तु अनुसरण व अंधानुकरण के बीच की भेद रेखा को समझना आवश्यक है. फैशन, खर्च, ऐश्वर्य, शान-शौकत को प्रदर्शित करने का एसा दबाव बना हुआ है, जिससे बचना कठिन है. वॉरेन बफेट विश्व के सर्वाधिक धनाढ्य व्यक्तियों में से एक हैं. 50 वर्षों से एक ही घर में रहते हैं और न ही उन्होंने आजतक कार्यालय बदला. सादगी का इससे अच्छा उदाहरण और क्या हो सकता है. एक व्याधि और है 'यों ही' यानि अकारण. रामायण की एक घटना का वर्णन यहां तर्क संगत होगा. सूर्पणखा को श्रीराम टालने के लिए लक्ष्मण के पास भेज देते हैं, जो उसकी नाक काट देता है. फिर स्वर्ण मृग आता है, जिसे पाने की लालसा सीता में जागृत होती है. महातपस्विनी सीता का स्वर्ण मृग से क्या लेना देना था, किन्तु यहां संदेश है बस 'यों ही'. इसी चक्कर में लोग स्टॉक मार्केट में पैसा लगा देते हैं, जाने समझे बिना बस 'यों ही'.

Bharatiya Jain Sanghatna (BJS)
Mobile Dispensary SEVA
as of today



46
Total Cities



208
Total Vans



10,043
Patients referred to Hospital



846,473
Patients

भगवान महावीर ने अनर्थ दंड की बात कही है। लोग निवृत्त होना ही नहीं चाहते, सम्पत्ति और सत्ता से चिपके रहते हैं। फेसबुक पर वर्च्युअल मित्रता को बढ़ाए जा रहे हैं बस 'यों ही'। लायकात जो भी हो, किन्तु हम उसे सफलता का पैमाना मान बैठे हैं।

आध्यात्मिक गुरु जगदीश वासुदेव (सद्गुरु) विद्यालय काल में अत्यंत साधारण विद्यार्थी रहे। उनकी अध्ययन में अधिक रुचि नहीं थी। जो अब तक समझ में नहीं आता था, वही विषय और वही अध्यापक, आज पांच गुना अधिक व आगे पीछे का भी समझ में आया। यह कोई चमत्कार नहीं था। उन्होंने यह महसूस किया कि उनके भीतर कोई ऐसी शक्ति है जो आज जागृत हुई है। हमारे भीतर भी छिपी इस शक्ति को पहचान कर हमें जागृत करना होगा।

हमारी श्वास पर भी हमारा नियंत्रण नहीं किन्तु हममें अधिकांश 'मैं' की व्याधि से पीड़ित रहते हैं। मात्र मानव सभ्यताएं ही नहीं अपितु समस्त सृष्टि सहअस्तित्व के आधार पर टिकी हुई है। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि सहअस्तित्व नहीं होता तो संभवतः हम नहीं होते या जीवन आज है वैसा नहीं होता। समझदार व्यक्ति का प्रथम लक्षण है विनम्रता। मनुष्य जीवन में गुरु का सर्वाधिक महत्व है क्योंकि उसके बिना कल्याण संभव नहीं है। गुरु की प्राप्ति तब तक नहीं होती जब तक कि विनम्रता नहीं आती। इस पृथ्वी या दुनियाँ में मेरी क्या औकात है? इस विवेकपूर्ण चिंतन से ही हम हलके हो जाते हैं। अहंकार रहित हो जाते हैं तब ही गुरु की प्राप्ति होती है। यह प्रकृति की व्यवस्था है कि सम्पूर्ण विनम्रता को धारण किये हुए पानी उपर से नीचे की ओर बहता है। समझदार व्यक्ति का दूसरा लक्षण है 'कृतज्ञता'। प्रकृति की जो भी व्यवस्थाएं हैं उन्हें हृदय से अपनाकर उनके प्रति कृतज्ञता दर्शाना ही भगवान की प्राप्ति के समान है। परिस्थितियाँ विपरीत ही क्यों न हो, प्रभु की इच्छा मानकर ससम्मान उन्हें स्वीकार करना ही 'कृतज्ञता' है। तीसरी महत्वपूर्ण बात है 'मन की आवाज़' को सुनने की कला विकसित करना। मन की आवाज़ अमल में लाना और मनमानी

करने में अंतर है। श्रीमान शांतिलालजी मुथ्था ने मात्र 31 वर्ष की आयु में 'मन की आवाज़' सुनकर ही भारतीय जैन संघटना की स्थापना की। आवश्यक नहीं कि कोई आपके साथ हो। मन की आवाज़ पर अकेले ही चलना पड़ता है। वे ही कुछ अलग या नवीन कर सकते हैं जो अंधानुकरण नहीं करते और मन की आवाज़ पर दृढ़ संकल्पित रहते हैं। 'मैं' को लेकर चले तो शायद सफलता उतनी सरल हो या न भी हो, किन्तु हमें स्वयं के समीप आना ही होगा। इस संसार में मेरा स्थान कहाँ है? सत्य और शील ये महावृत्त हैं। सत्य की अनुपस्थिति में अहिंसा अर्थहीन हो जाती है। व्यक्ति में सजगता आएगी तब ही सत्य तथा अपरिग्रह इत्यादि मूल्यों को समझ पाएगा।

मनुष्य व्यक्तित्व के दो पहलू हैं (1) इमोशनल और (2) रेशनल। अपने अंदर बैठे उस जंगली जानवर को जो आपके नियंत्रण में नहीं है, निपटने के लिए न्याय संगत (rational) क्षमतायें जागृत करना आवश्यक है। मनुष्य स्वभाव और आदतों से चिपका रहता है, किन्तु इससे मुक्ति के लिए सर्जरी जरूरी है। विवेक बुद्धि को इतना बढ़ाएं कि इमोशनल तत्व (entity) को नियंत्रण में कर सकें, यही जीवन का सार है। इस हेतु प्रतिदिन प्रातः और सांय 10 मिनट का अनापान करना सर्जरी का सशक्त तरीका है। दूसरा यह कि प्रातः और सांय पचखान करें। क्रोध, द्वेष, असत्य और ईर्ष्या को जागृत न होने दें। मन पर नियंत्रण करने के लिए प्रतिदिन डायरी लिखें। जिन पर आज नियंत्रण नहीं कर सकें, उसका वर्णन करें। शरीर ने क्या महसूस किया, यही लिखना है व स्वयं से संवाद करना है। यही प्रतिक्रमण है। मात्र मिच्छामि दुक्कदम करके आगे बढ़ जाना प्रतिक्रमण नहीं है। हम हमारे स्वभाव से परिचित हो जाएं यही ज्ञान चक्षु और स्थिति प्रज्ञता है।

स्वयं के जीवन के मालिक बनिये। मन की शक्ति से क्रोध, द्वेष, असत्य और ईर्ष्या आदि से मुक्ति हेतु नियमित रूप से प्रतिदिन विद्यार्थी बन कर सीखने का प्रयास व अभ्यास करें।

प्रतिलेखन : निरंजन जुंवा जैन

संपादक की कलम से

प्रिय स्नेहीजन,

इस सृष्टि के सभी जीव, एक इंद्रिय हो या पांच इंद्रिय या फिर प्रकृति, सभी के जीवन का आधार सहअस्तित्व है। एक इन्द्रिय जीव की श्रेणी में मुख्य रूप से पेड़ पौधे (वनस्पति) आते हैं जो पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के साथ अत्यंत विनम्र भाव से फल, छाया और ऑक्सीजन बिना किसी अपेक्षा के प्रदान करते रहते हैं। देना उनका स्वभाव है।

सभी पांच इन्द्रिय प्राणियों में, मनुष्य ही सर्वश्रेष्ठ और शक्तिमान भी है। हम मनुष्य किसे कितना और क्या देते हैं? प्रकृति की यह व्यवस्था है कि मनुष्य समाज से जितना ले उससे अधिक दे। किन्तु लेना उसका स्वभाव बन गया है। इतना ही नहीं, मनुष्य प्रकृति का भक्षक भी बन बैठा है। मर्यादाओं का हद से अधिक उल्लंघन जब जब होता है, प्रकृति रौद्र रूप धारण करती है। कोरोना उसका रौद्र रूप और चेतावनी भरा बोधपाठ भी है।

मनुष्य जीवन वह परीक्षा है जिसमें प्रत्येक को उत्तीर्ण होकर इंसानियत नाम की डिग्री प्राप्त करनी होती है। अहंकार के नशे में धुत्त मानव को यह स्मरण कराने ही प्रकृति कोरोना के रूप में प्रकट हुई है। यदि इतना समझ लें, तो अब भी अधिक विलंब नहीं हुआ है।

निरंजन जुंवा जैन

सदस्य - BJS राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति



- * सुसज्ज प्रशिक्षकों द्वारा ऑनलाईन प्रशिक्षण
- * आज ही रेजिस्ट्रेशन करें

- * राज्यवार कार्यशालाओं का आयोजन
- * जानकारी व पूछताछ हेतु कॉन्टेक्ट पर्सन से संपर्क करें

Registration Links: English : <http://bit.ly/SGePre1> Hindi: <http://bit.ly/SGHPre1> Marathi: <http://bit.ly/SGmPre1>

Starting Date	Name of the Trainer	Language	For More Details Contact
25.05.2020 2.00pm onwards	Ms. Harshita Nahar	Hindi & English	Ms Amita Jain-SG State Head, MP (West) 99262 91911
28.05.2020 2.00pm onwards	Mr. Ratnakar Mahajan	Hindi & Marathi	Mr. Ratnakar Mahajan-SG State Head, MH 86688 36446
28.05.2020 3.00pm onwards	Ms. Anita Jain	Hindi	Ms. Anita Jain-SG State Head, RJ 79763 40378 / 94132 33248
28.05.2020 3.00pm onwards	Ms. Rashmi Nahata	English	Shri Mahendra Jain-SG State Head, TN 88071 55443
28.05.2020 3.00pm onwards	Ms. Meghna Jain	Hindi	
29.05.2020 3.00pm onwards	Ms. Kiran Mundra	Hindi & Marathi	Mr. Ratnakar Mahajan-SG State Head, MH 86688 36446
30.05.2020 3.00pm onwards	Ms. Asha Chajjer	Hindi & English	Mr. Prakash Gulecha-SG State Head, Karnataka, 93434 99333
30.05.2020 3.00pm onwards	Mr. Rajesh Jain	Hindi & English	
31.05.2020 3.00pm onwards	Ms. Raj Nahar	Hindi & English	Mr. Ratnakar Mahajan-SG State Head, MH 86688 36446

कर्नाटक -तामिलनाडु BJS Mobile Dispensary SEVA विवरण

	मोबाइल वेन संख्या	शहर	जांच व दवा वितरण	रक्तदान
कर्नाटक 7 से 27 अप्रैल, 2020	24	03 बीजापुर, बैंगलोर, मैसूर	36952 रोगी	11 अप्रैल से 13 मई 14 शहरों से 787 रक्त यूनिट
तामिलनाडू 9 अप्रैल से 20 मई तक	06	06 इरोड, सिरकाली, चिदंबरम, कुडलूर, ऊटी	30673 रोगी	



दिए लिंक को क्लिक करें



<https://youtu.be/bJHA64XiBpw>

Mobile Dispensary SEVA on ground session